रिकार्ड– मुखड़ा देख ले प्राणी.....ओमशांति प्रातःक्लास 21–4–67
रुहानी बच्चां को समझाया गया है कि प्राणी आत्मा को कहते हैं। अब बाप आत्माओं को समझाते हैं यह गीत तो है भक्तिमार्ग का। धीरे2 यह बजाना भी बंद हो जावेगा। इनकी दरकार नहीं है। यह तो सिर्फ इनका सार समझाया जाता है। अभी तुम यहां जब बैठते हो तो अपने को आत्मा समझो। देह का भान छोड़ देना है। हम आत्मा बहुत छोटी बिंदी हैं। मैं ही इस शरीर द्वारा पार्ट बजाता हूँ। यह आत्मा का ज्ञान कोई को है नहीं। बाप बैठ समझाते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप की याद में बैठना है। यह नालेज बाप ही कल्प2 भारत में आकर देते हैं। अपने को हमेशा समझो कि मैं छोटी आत्मा हूँ। आत्मा ही सारा पार्ट बजाती है। इस शरीर से तो सारा देहभान निकल जाए। इसमें ही सारी मेहनत है। हम आत्मा यह 84जन्मों का पार्ट बजाती हूँ। हम सारे इस नाटक के एक्टर्स हैं। उंच ते उंच एक्टर है परमपिता परमात्मा। बुद्धि में रहता है कि वो भी इतनी छोटी बिंदी है। उनकी महिमा कितनी भारी है वो भी ज्ञान का सागर है सुख का सागर है .....परंतु है कितनी छोटी बिंदी। अहम आत्मा भी छोटी बिंदी है। आत्मा को सिवाय दिव्य दृष्टि के देखा नहीं जा सकता। यह नई प्वाइंट्स तुम अभी सुन रहे हो। दुनियां क्या जाने?तुम्हारे में भी थोड़े हैं जो यथार्थ रीति जानते हैं और यह बुद्धि में रहता है कि आत्मा छोटी बिंदी है। हमारा बाप इस ड्रामा का मुख्य एक्टर है। उंच ते उंच एक्टर बाप है। इन सब के आक्युपेशन का भी तुमको पता है। बाप ज्ञान का सागर है ;परंतु शरीर के बिना तो ज्ञान दे नहीं सकते हैं ना। शरीर द्वारा ही बाप बोल सकते हैं। अशरीरी होने से आर्गन्स अलग हो जाते हैं। भक्तिमार्ग में तुम देहधारियों का ही सिमरण करते हो। परमपिता परमात्मा का नाम, रूप ,देश, काल ही नहीं जानते हैं। बस कह देते हैं परमात्मा नाम, रूप से न्यारा है। बाप ...कहते हैं ड्रामा अनुसार तुम ही जो नम्बरवन में थे तुमको ही फिर तमोप्रधान जरूर बनना है। तो यह अवस्था अपनी मजबूत रखनी है कि हम आत्मा हैं। हम इस शरीर द्वारा बात करती हूँ। इनमें ज्ञान है। यह ज्ञान और कोई की बुद्धि में नहीं कि हमारी आत्मा में 84जन्मों का पार्ट अविनाशी नूंधा हुआ है। आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरा लेकर पार्ट बजाती है। यह बहुत2 नई प्वाइंट्स है। एकांत में बैठकर अपने साथ ऐसी2 बातें करो कि मैं आत्मा हूँ। बाप से सुन रहा हूँ। धारण मुझ आत्मा में होती है। मुझ आत्मा में ही पार्ट भरा हुआ है। मैं आत्मा अविनाशी हूँ। यह अंदर में घूमना चाहिए। हमको तमोप्रधान से अब सतोप्रधान बनना है। साधु–संत आदि सब भक्तिमार्ग के देह अभिमानी हैं। उनको यह आत्मा का भी ज्ञान नहीं है। कितने बड़े2 किताब अपने पास रखते हैं। अहंकार कितना है। कितने टाइटिल्स मिलते हैं। है ही क्या?फकीर। उनके फिर पांव बैठकर धोते हैं। अंधश्रद्धा है ना। वास्तव में कोई भी मनुष्य महात्मा हो नहीं सकते। यह है ही तमोप्रधान दुनियां। उंच ते उंच आत्मा भी अभी पार्टधारी हैं। इस समय तो सब मनुष्य मात्र तमोप्रधान है। आजकल जो भक्ति जास्ती करते हैं ,शास्त्र आदि बहुत पढ़ते हैं उनका ही मान है ;क्योंकि भक्ति का राज्य है। अभी तुम जानते हो भक्तिमार्ग अब खतम होना है। ज्ञान तो सिर्फ तुम बच्चों को ही मिलता है। भक्तिमार्ग कितना बड़ा है। सब भक्ति ही भक्ति है। अभी तो भक्ति से तो जैसे कि बांस आती है ;क्योंकि भक्ति दुर्गति है ना। तो दुर्गति को पाये हुए से बांस आती है। मुख्य बात तो अब तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का पुरुषार्थ करना है। इस बात को अंदर में घोटना चाहिए। ज्ञान सुनाने वाले हों। लवारी तो बहुत ही हैं ;परंतु याद है नहीं। अंदर में अंतर्मुखता रहनी चाहिए। हमको तो बाप की याद से पतित से पावन बनना है। सिर्फ पंडित नहीं बनना है। इस पर एक पंडित का मिसाल भी है ना कि माइयों को कहता था कि राम नाम जपने से सागर से पार हो जावेंगे।.....तो ऐसे लवारी नहीं बनना है। ऐसे तो बहुत हैं। समझानी बहुत अच्छी है ;परंतु योग तो है नहीं। सारा दिन ही देह अभिमान में रहते हैं। नहीं तो बाबा को

चार्ट भेजना चाहिए। हम इस समय उठता हूँ। ऐसा याद करता हूँ। कुछ भी समाचार नहीं देते हैं ज्ञान की बहुत लावार है। योग में लावारी है नहीं। भल बड़ों2 को ज्ञान देते हैं ;परंतु योग में बहुत कच्चे हैं। सवेरे उठना है ,बाप को याद करना है। बाबा आप कितने मोस्ट बिलवेड हो। कितना यह विचित्र ड्रामा बना हुआ है। कोई भी यह राज नहीं जानते। भक्तिमार्ग में कितना तूफान है ;परंतु ना आत्मा को ही ,ना परमात्मा को ही जानते हैं। इस समय मनुष्य जानवरों से भी बदतर हैं। हम भी ऐसे ही थे। माया के राज्य में कितनी दुर्दशा हो जाती है। एकदम लम्पट हो जाते हैं। अभी तुम ही तमोप्रधान बने हो। यह ज्ञान तुम कोई को भी दे सकते हो। बोलो तुम आत्मा हो। आत्मा तमोप्रधान है। इसने सतोप्रधान बनना है। पहले तो अपने को आत्मा समझो। गरीबों के लिए तो और ही सहज है। साहुकारों को तो झंझट बहुत रहते हैं। बाप कहते हैं मैं आता हूँ साधारण के तन में। ना बहुत गरीब, ना बहुत साहुकार। अभी तुम समझते हो कि कल्प2 बाप आकर हमको यह शिक्षा देते हैं कि पावन कैसे (बनो)। बाकी बाबा कोई तुम्हारे धंधे आदि में खिटपिट है ,यह है, वो है इसके लिए नहीं आये हैं। तुम तो बुलाते ही हो हे पतित—पावन आओ। तो पावन बनने की युक्ति बताता हूँ। यह खुद भी कुछ नहीं जानते थे। एक्टर होकर और ड्रामा की आदि,मध्य,अंत को नहीं जाने तो जनावर हो गये ना। बाबा ने कहा था यह प्वाइंट्स तो जरूर लिखो आत्माएं इस सृष्टि चक्र में एक्टर्स हैं। यह भी कोई जानते थोड़े ही हैं। भल कह देते हैं आत्मा मूलवतन में निवास करती है ;परंतु अनुभव से नहीं कहते हैं। तुम तो अभी प्रैक्टिकल में जानते हो। हम आत्मा मूलवतन की रहवासी हूँ। हम आत्म बहुत छोटी हैं। और आत्मा अविनाशी है। यह तो बुद्धि में याद रहना चाहिए ना। बहुतों का योग बिल्कुल ही है नहीं। देहअभिमान के कारण फिर गल्तियां भी बहुत होती हैं। मूल बात है ही देहीअभिमानी बनना। सवेरे उठकर यह मनन करो तो दिन में भी वो ही याद रहे। हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है। बस यही तात लगी रहे। हमारे मुख से कोई पत्थर तो नहीं निकलता। कोई भूल हो जावे तो झट रिपोर्ट कर देनी चाहिए कि बाबा हमसे यह भूल हो गई। छुपाने से वो और ही वृद्धि हो जाती है। बाबा को समाचार देते रहो। बाबा लिख देंगे तुम्हारा योग ठीक नहीं है। पावन बनने की मुख्य बात है। तुम बच्चों की बुद्धि में 84जन्मों की कहानी है। जितना हो सके बस यही चिंतन लगा रहे कि हम सतोप्रधान बन जावें। देह अभिमान को छोड़ना है। तुम हो राजऋषि। हठयोगी कब राजयोग सिखा नहीं सकते हैं। राजयोग बाप ही सिखाते हैं। ज्ञान भी बाप ही देते हैं। बाकी इस समय है तमोप्रधान भक्ति। ज्ञान सिर्फ बाप ही संगम पर आकर सुनाते हैं। बाप आते हैं तो भक्ति खतम हो जाती है। यह दुनियां ही खतम होनी है। ज्ञान और राजयोग से सतयुग की स्थापना होती है। भक्ति चीज ही अलग है। मनुष्य फिर कह देते हैं दुःख और सुख सब यहां ही है। अब तुम बच्चों पर बहुत जिम्मेवारी है। अपना कल्याण करने की युक्ति रचते रहो। यह भी समझाया है कि पावन दुनियां है शांतिधाम और सुखधाम। यह है अशांतिधाम और दुःखधाम। यह भी किसको पता नहीं है। पहले2 मुख्य बात है ही योग की। योग नहीं है तो सिर्फ ज्ञान की लावार है सिर्फ पण्डित मुआफिक। आजकल तो रिद्धि—सिद्धि भी बहुत निकली है। इनसे ज्ञान का कनेक्शन नहीं है। मनुष्य कितना झूठ में फंसे हुए हैं। अभी सच्चा बाप आया है। तो भी मनुष्य कहते हैं अगर भगवान है तो यह करके दिखावे। मक्खी को जिन्दा करके दिखावे। यह तो अपने को भगवान कहते ही नहीं हैं। यह तो पतित ब्रह्मा है। बाप खुद कहते हैं कि मैं पतित दुनियां, पतित शरीर में आता हूँ। पावन तो कोई यहां इस शरीर में हो नहीं सकते हैं। सन्यासी तो और ही पतित हैं जो परमात्मा को सर्वव्यापी कह देते हैं। जिधर देखो परमात्मा ही परमात्मा है। तो पापात्मा ठहरे ना। यह तो अपने को भगवान कहते नहीं हैं। यह तो कहते हैं मैं भी पतित हूँ। पावन होंगे तो फरिश्ता बन जावेंगे।

तुम भी पवित्र फरिश्ता बन जावेंगे। तो मूल बात ही है कि हम पावन कैसे बनें?याद बहुत जरूरी है। बहुत हैं जो समझते हैं कि हम तो शिवबाबा के ही हैं। याद है ही। यह सब गपोड़े हैं। इसमें तो पुरुषार्थ करना है। सवेरे उठकर अपने को आत्मा समझ बैठ जाना है। रुह रिहान करनी है। आत्मा ही बातचीत करती है ना। अभी तुम देहीअभिमानी बनते हो। जो कोई का कल्याण करते हैं तो उनकी महिमा की जाती है। वो होती है देहअभिमान की महिमा। यह तो है निराकार परमपिता परमात्मा की महिमा। तुम ही समझते हो। शास्त्रों आदि में तो नम्बरवन झूठ है। व्यास जिनको भगवान कहते हैं उसने क्या2 बैठ गपोड़े मारे हैं। भक्तिमार्ग है ही दुर्गतिमार्ग। दुर्गति को पाने के लिए भी तो कोई रास्ता होना चाहिए ना। इसस सीढ़ी नीचे ही उतरनी है। यह सीढ़ी और कोई की बुद्धि में थोड़े ही होगी। हम 84जन्म कैसे लेते हैं। नीचे ही उतरते आते हैं। अब तो पाप का घड़ा भर गया है। साफ कैसे हो। इसलिए बाप को बुलाते हैं। तुम हो पांडव सम्प्रदाय। तुम रिलीजो भी हो तो पालिटिकल भी हो। सब रिलीजन की बात समझाते हैं। दूसरा कोई समझा नहीं सकते। बाकी वो धर्म स्थापन करने वाले क्या करते हैं उनके पिछाड़ी को औरों को आना पड़ता है। बाकी वो कोई मोक्ष थोड़े ही देते हैं। बाप ही पिछाड़ी में आकर सबको पवित्र बनाकर ले जाते हैं। इसलिए ही उस एक के सिवाय और कोई की महिमा है नहीं। उनकी वा तुम्हारी कोई महिमा नहीं है। बाबा ना आता तो तुम क्या करते?अभी बाप तुमको चढ़ती कला में ले जाते हैं। गाते भी हैं सर्व का भला ;परंतु अर्थ थोड़े ही समझते हैं। महिमा तो बहुत करते हैं। जैसे कहते हैं ना अकालतख्त पर बैठा है जहां पुलिस पहुंच नहीं सकती। अब बाप ने समझाया है अकाल तो आत्मा है। उनका यह तख्त है। आत्म अविनाशी है। काल कब खाता नहीं। आत्मा को एक शरीर छोड़कर जाकर दूसरा लेना है। बाकी लेने के लिए कोई आते थोड़े ही हैं। वो सब है बकवाद। तुमको कोई का भी दुःख नहीं है। शरीर छोड़ा, गया दूसरा पार्ट बजाने। रोने की क्या दरकार है। हम आत्माएं भाई2 हैं यह भी तुम जानते हो। गाते हैं आत्मा परमात्मा.....बाप कहां आकर मिलते हैं यह कोई को पता थोड़े ही है। अभी तुमको हर बात की समझानी मिलती है। तब से सुनते ही आते हो। कोई किताब आदि थोड़े ही उठाते हैं। सिर्फ रिफर करते हैं समझाने के लिए। गीता है नम्बरवन माई—बाप। वो झूठी तो बाकी सारी रचना ही झूठी हो जाती। रावण की रचना सारी झूठी ही झूठी। बाप सच्चा है तो सच्ची रचना रचते हैं। सच्च बताते हैं। सच्च से जीत ,झूठ से हार। सच्चा बाप सच्च खंड की स्थापना करते हैं। रावण से तुमने बहुत हार खाई है। यह भी खेल बना हुआ है। अभी तुम जानते हो हमारा राज्य स्थापन हो रहा है। फिर भी सब होगा नहीं। यह तो सब पीछे आये हैं। यह सृष्टि चक्र बुद्धि में रखना कितना सहज है। सिर्फ इसी में ही खुश नहीं होना है कि हम ज्ञान बहुत अच्छा देते हैं। साथ2 में योग और मैनर्स भी चाहिए। बहुत मीठा बनना है। कोई को दुःख ना देना है। प्यार से समझाना चाहिए। पवित्रता पर भी कितना हंगामा होता है। वो भी ड्रामाअनुसार ही होता है। यह बना बनाया हुआ ड्रामा है ना। ऐसे नहीं कि ड्रामा में होगा तो मिलेगा। नहीं। मेहनत करनी है। देवताओं मिसल दैवी गुण धारण करने हैं। बहुत मीठा बनना है। देखना चाहिए हम उल्टी चलन चलकर बाप की इज्जत तो नहीं गंवाते। सतगुरू का निन्दक ठौर ना पावे। मगर यह तो बाप ,टीचर भी है। आत्मा को अब स्मृति रहती है बाबा ज्ञान का सागर है ,सुख का सागर है। जरूर ज्ञान देकर गया हूँ। तब तो गायन होता है ना। इनकी आत्मा में कोई ज्ञान था क्या?आत्मा क्या है यह भी किसको पता नहीं है। इस ड्रामा को कोई भी नहीं जानते हैं। जानना तो मनुष्यों को ही है ना। बाप ने समझाया है कि कैसे पहले अव्यभिचारी फिर व्यभिचारी भक्ति चालू होती है। अभी तो पांच भूतों की भी पूजा करते रहते हैं। रुद्र यज्ञ रचते हैं तो आत्मा की पूजा करते हैं वा देवी शरीरों की पूजा अच्छी?जरूर आत्मा की ही पूजा अच्छी

कहेंगे ना। यह शरीर तो पांच तत्वां का बना हुआ है। इसलिए एक शिवबाबा की पूजा ही अव्यभिचारी पूजा है। अब उस एक से ही सुनना है। इसलिए कहा जाता है हियर नो ईविल.... .....भक्तिमार्ग की कोई बात नहीं सुनो। वो सब है दुर्गति मुझ एक से ही सुनो। यह है अव्यभिचारी ज्ञान। भक्तिमार्ग के शास्त्रों का भी घमंड कितना है। कितने टाइटिल्स मिलते हैं। संस्कृत भाषा तो इन साधु–सन्यासियों ने ही बैठ सुनाई है। निकाली है। जब मगर लैंगवेज हिंदी है तो उसका ही जास्ती मान होना चाहिए ना। वो फिर समझते हैं कि देवी देवताओं की संस्कृत भाष थी। वहां तो ऐसी भाषा होती ही नहीं है। यथा राजा–रानी तथा लैंगवेज होती है। सतयुग की भाषा अपनी ,त्रेता की अपनी ही होगी। आगे चलकर यह भी पता पड़ सकता है कि त्रेता में कौन सी भाषा होती है। मुख्य बात तो देह अभिमान ही टूटेगा तब ही शीतल बनेंगे। बाप की याद में रहेंगे तो मुख से कब उल्टा–सुल्टा नहीं बोलेंगे। कुदृष्टि नहीं जावेगी। देखते हुए भी जैसे कि देखते नहीं हो। हमारा ज्ञान का तीसरा नेत्र खुला हुआ है। बाप ने आकर त्रिनेत्री त्रिकालदर्शी बनाया है। अभी तुमको तीनों कालों ,तीनों लोकों का ज्ञान है।

17–4–67 प्रातः की रही हुई प्वाइंट्स– आखरीन एक दिन सन्यासी भी आवेंगे। अभी तो उनको राजाई है। इनके पावों पर पड़ते हैं। अंगूठा पानी में धोकर पीते हैं। पूजते हैं। बाप कहते हैं यह भूत पूजा है। मेरे तो पैर है नहीं। इसलिए पूजने भी नहीं देंगे। मैंने तो यह तन लोन लिया है। इसलिए इसको भाग्यशाली रथ भी कहा जाता है। इस समय तो बहुत सौभाग्यशाली हो ;क्योंकि तुम यहां ईश्वरीय सन्तान हो। गायन भी है आत्मा परमात्मा अलग..... ..... तो जो बहुत काल से अलग रहते हैं वो ही आते हैं। उनको ही आकर पढ़ाता हूँ। कृष्ण के लिए थोड़े ही कह सकेंगे। वो तो पूरे 84 जन्म लेते हैं। यह है उनका अंतिम जन्म। इसलिए नाम भी उस एक का ही श्यामसुंदर पड़ा है। राम को भी काला दिखाते हैं। फिर उनको भी क्यों नहीं श्याम सुंदर कहते? शिवबाबा का तो किसको पता भी नहीं है कि क्या चीज है। यह बाप ही आकर समझाते हैं कि मैं हूँ परमपिता परमात्मा। परमधाम में रहने वाला हूँ। तुम भी वहां के ही रहने वाले हो। मैं सुप्रीम पतित–पावन हूँ। मुझे ही पतित–पावन कहकर बुलाते हो। अभी इन सब बातों को तुम समझ रहे हो। बंदर बुद्धि से हम ईश्वरीय बुद्धि बन रहे हैं। ईश्वर की बुद्धि में जो ज्ञान है वो तुमको सुना रहे हैं। भक्तिमार्ग पूरा हुआ। यह ज्ञान तुमको सिर्फ संगम पर ही मिलता है। भक्ति आधा कल्प चलती है। भक्ति है रात, ज्ञान है दिन। भक्ति में ज्ञान हो नहीं सकता। ज्ञान देने वाला सिर्फ एक ही बाप है। यह ज्ञान कोई शास्त्रों में नहीं है। उनमें तो हैं दंत कथायें ;परंतु कोई को भी सीधा कहो तो बिगड़ पड़ेंगे। आजकल तो किसी को पत्थर मारने में भी देरी नहीं करते हैं। पुलिस भी देखो गवर्मेंट साथ ही पिकेटिंग करने लग पड़ती है। फिर उनको भी जेल में डाल देते हैं। वो खुद औरों को जेल में ले जाते हैं। अभी खुद जेल में जाते रहते हैं। वंडर है ना।

17–4–67– कोई2 तो पवित्र बनते ही नहीं हैं। बाप का कहना मानते ही नहीं हैं; क्योंकि पहचान नहीं। भगवान को भी नहीं मानते हैं। कुछ समय पवित्र रहकर फिर गिर पड़ते हैं। जो बाप की याद में रहेंगे वो ही उंच पद पावेंगे। बाकी तो प्रजा में चले जावेंगे। यहां पर तुम आये हो राजा–रानी बनने। पढ़ते नहीं हैं तो प्रजा बन जाते हैं। यह दैवी राजधानी होती है। इस संगम को ही पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। बाकी सब है कलियुग। तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुग में। मनुष्य तो घोर अंधेरे में हैं ना। फिर जब भंभोर को आग लगेगी तो सब जागेंगे। फिर तो पीछे कुछ कर नहीं सकेंगे। टू लेट हो जाते हैं। कहीं2 तो नये भी पुरानों से तीखे चले जाते हैं ;क्योंकि देरी से आने कारण और ही मुख्य प्वाइंट्स मिलने पर तीखे हो जाते हैं। मुख्य है ही बाप की याद। याद की ही यात्रा है। एक दो से पूछना होता है शिवबाबा को याद करते हो?नहीं तो याद दिलानी होती है। याद से ही वर्सा मिलेगा। ओम।